PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

Dr. S. K. Singh
Mob. - 9431449951

व्याप्ति

→ व्याप्ति अनुमान का तार्किक आधार है। अनुमान में लिंग या हेतु के आधार में साध्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है किन्तु यह ज्ञान तब तक संभव नहीं जब तक कि लिंग के साथ साध्य का संबंध ज्ञात न हो। लिंग (हेतु) और साध्य का संबंध व्याप्ति ही उद्घाटित करती है। इस प्रकार व्याप्ति ज्ञान के अभाव में अनुमिति संभव नहीं।

→ 'व्याप्ति' शब्द की उत्पत्ति 'वि + आप्ति' की संधि से हुई है। 'वि' का अर्थ है - 'विशिष्ट' और 'आप्ति' का अर्थ है - 'संबंध'। इस प्रकार 'व्याप्ति' शब्द का अर्थ है - 'विशिष्ट संबंध'।

→ दो वस्तुओं का सर्वदा निश्चित रूप से एक साथ रहना या 'नियत साहचर्य' ही दो वस्तुओं का विशिष्ट संबंध है तथापि मात्र दो वस्तुओं के नियत साहचर्य को व्याप्ति की संज्ञा नहीं दी जा सकती। मेढक और जल दोनों में नियत साहचर्य तो है किन्तु इसे 'व्याप्ति संबंध' नहीं कहा जा सकता।

→ वस्तुतः व्याप्ति वह अटल नियत साहचर्य है जो अव्यभिचारी है अथवा जिस नियत साहचर्य का अपवाद नहीं पाया जाता है। जैसे - अग्नि

Scanned with CamScanner

और धूम्र का संबंध। शब्दान्तर से, हेतु और साध्य के व्यभिचारशून्य नियत साहचर्य के संबंध को व्याप्ति कहा ~~जाता है~~/ जा सकता है।

→ किन्तु व्याप्ति मात्र व्यभिचारशून्य नियत साहचर्य नहीं है अपितु इसके साथ ही इस संबंध को उपाधिरहित होना चाहिये।

→ नैयायिक यह मानते हैं कि व्याप्ति हेतु का साध्य के साथ ~~स्वा~~ स्वाभाविक उपाधिरहित संबंध है। यथा - धूम्र का अग्नि के साथ जो संबंध है वह स्वाभाविक है, साथ ही यह संबंध उपाधिरहित भी है क्योंकि धूम्र जहाँ भी रहेगा वहाँ अग्नि भी होगा, अग्नि के अभाव में धूम्र की उत्पत्ति ~~या उपस्थिति~~ संभव नहीं। इसलिये धूम्र और अग्नि में व्याप्ति का संबंध है। इस संबंध के कारण ही धूम्र अग्नि का लिंग, हेतु या चिह्न कहा गया है।

इसी तरह अग्नि धूम्र का हेतु या लिंग या चिह्न नहीं क्योंकि अग्नि की उपस्थिति से धूम्र की उपस्थिति सिद्ध नहीं होती, या धूम्र के अभाव में भी अग्नि संभव होती है। यथा - तप्त लोहे में अग्नि उपस्थित होने पर भी वहाँ धूम्र उ- उपस्थित नहीं होता। अग्नि के साथ धूम्र का होना किसी अन्य उपाधि, यथा - ईंधन के गीलेपन, पर निर्भर करता है।

इस प्रकार उक्त उदाहरण में धुँआ और अग्नि में व्याप्ति संबंध है किन्तु अग्नि और धुँआ